अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : पाँचवीं – जैन धर्म चन्द्रिका (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) लगे दोषों की निवृत्ति होती है-
(क) संवर से (ख) सामायिक से
(ग) प्रतिक्रमण से (घ) तीनों से (ग)

(b) अठारह पापस्थान के पाठ से प्रतिक्रमण होता है-
(क) प्रमाद का (ख) कषाय का
(ग) अशुभ योग का (घ) तीनों का (घ)

(c) विधि रूप प्रतिज्ञा है-
(क) व्रत (ख) पच्चक्खाण
(ग) दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं (क)

(d) ''जावज्जीवाए'' से तात्पर्य है -
(क) नियम पर्यन्त (ख) जीवन पर्यन्त
(ग) एक दिन-रात (घ) उपर्युक्त तीनों (ख)

(e) छह आवश्यकों में तीसरा आवश्यक है -
(क) देव का (ख) गुरु का
(ग) धर्म का (घ) तीनों का (ख)

(f) व्रत भंग के निकट पहुँच जाना है-
(क) अतिक्रम (ख) व्यतिक्रम
(ग) अतिचार (घ) अनाचार (ग)

(g) स्थूलिभद्र ने किसका मद किया था -
(क) तप का (ख) श्रुत का
(ग) लाभ का (घ) रूप का (ख)

(h) श्रावकों के दर्शन सम्बन्धी अतिचार हैं-
(क) 14 (ख) 60
(ग) 15 (घ) 05 (घ)

(i) निम्न में से आगम का प्रकार है-
(क) सुत्तागमे (ख) अत्थागमे
(ग) तदुभयागमे (घ) तीनों ही (घ)

(j) साधु-साध्वियों के लिए अप्रतिहारी वस्तु है-
(क) औषध (ख) संस्तारक
(ग) भेषज (घ) खादिम (घ)

(k) ईर्या समिति का आलम्बन है-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) चारित्र (घ) उपर्युक्त तीनों (घ)

(l) निम्न में से उद्गम का दोष है-
(क) अज्झोयरए (ख) मूलकम्मे
(ग) वणीमगे (घ) निमित्ते (क)

(m) दूसरों को हानि पहुँचाने का विचार करना है-
(क) संरंभ (ख) समारंभ
(ग) आरम्भ (घ) उपर्युक्त तीनों (क)

(n) सचित्त से ढँकी वस्तु लेने पर साधु-साध्वियों को दोष लगता है-
(क) पिहिय (ख) निक्खित्त
(ग) दायग (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(o) गवेषणैषणा के कुल दोष हैं-
(क) 16 (ख) 32
(ग) 10 (घ) 42 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) अयोग्य सावद्य आचरण करना अकरणीय है। (नहीं)

(b) पौषध कम से कम चार प्रहर का होता है। (हाँ)

(c) इस लोक के सुख की इच्छा करना तप का अतिचार है। (हाँ)

(d) अधिकतम 160 तीर्थंकर एक साथ हो सकते हैं। (हाँ)

(e) अभ्याख्यान का अर्थ चुगली करना है। (नहीं)

(f) महाव्रत का अन्य नाम अणुव्रत है। (नहीं)

(g) 15 कर्मादान श्रावकों द्वारा आदरने योग्य हैं। (नहीं)

(h) प्रासुक से तात्पर्य उद्गम आदि दोषों से रहित है। (नहीं)

(i) एक आचार्य का शिष्य समुदाय 'गण' है। (नहीं)

(j) 'प्रत्याख्यान' करण योग के बिना ही ग्रहण किये जाते हैं। (नहीं)

(k) आवश्यकता होने पर साधु-साध्वियों के लिए गुप्ति का पालन अनिवार्य है। (नहीं)

(l) साधु के निमित्त उधार लाकर देवे तो प्रामृत्य दोष लगता है। (हाँ)

(m) साधु को क्षुधा वेदनीय की शान्ति के लिए आहार नहीं करना चाहिए। (नहीं)

(n) चार अंगुल मिट्टी हटाकर साधु को परठना चाहिए। (नहीं)

(o) साधु-साध्वियों की भाषा निश्चयात्मक होनी चाहिए। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	वितिगिच्छा	(क) मूँग, चने की दाल आदि	धर्म के फल में संदेह
(b)	वेरमणं	(ख) प्रतिलेखन	निवृत्त होना
(c)	णासावहारो	(ग) सब्जी आदि	धरोहर दबाने के लिए झूठ बोलना
(d)	तेनाहडे	(घ) किसी के साथ	चोर की चुराई वस्तु लेना
(e)	सागविहि	(च) साहरिय	सब्जी आदि
(f)	सूपविहि	(छ) परियट्टिए	मूँग, चने की दाल आदि
(g)	मोहरिए	(ज) आहाकम्म	निरर्थक वचन बोलना
(h)	पडिलेह	(झ) अपमाणं	प्रतिलेखन
(i)	अणुमयं	(य) धर्म के फल में संदेह	विशेष सम्मान को प्राप्त
(j)	केणइ	(र) पुव्विपच्छासंथवं	किसी के साथ
(k)	उद्गम का दोष	(ल) चोर की चुराई वस्तु लेना	परियट्टिए
(l)	उत्पादना का दोष	(व) निरर्थक वचन बोलना	पुव्विपच्छासंथवं
(m)	ग्रहणैषणा का दोष	(क्ष) निवृत्त होना	साहरिय
(n)	परिभोगैषणा का दोष	(त्र) विशेष सम्मान को प्राप्त	अपमाणं
(o)	साधु के निमित्त बना आहार	(ज्ञ) धरोहर दबाने के लिए झूठ बोलना	आहाकम्म

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मैंने कषाय का प्रतिक्रमण किया।	चण्डकौशिक
(b)	मैंने कुल का मद किया था।	मरीचि
(c)	मैं शरणागति व विनय का प्रतीक हूँ।	वंदना का आसन
(d)	मैं बिना किसी करण कोटि वाला व्रत हूँ।	12वाँ अतिथि संविभाग व्रत
(e)	मेरे मूल भेद 500 हैं।	सूक्ष्म/प्रत्येक वनस्पतिकाय
(f)	मैं प्रतिक्रमण का सार रूप पाठ हूँ।	इच्छामि ठामि
(g)	मैं आत्मा को मलिन करता हूँ।	पाप
(h)	मेरा अर्थ आत्मा में रमण करना है।	चारित्र
(i)	मेरा अर्थ निष्प्रयोजन पाप करना है।	अनर्थदण्ड
(j)	12 व्रतों में हम मूल व्रत हैं।	पाँच अणुव्रत
(k)	मेरा तात्पर्य साधु के निमित्त आहार स्थापना से है।	ठवणा (स्थापना)
(l)	मैं मिश्र वस्तु लेने से लगने वाला दोष हूँ।	उम्मीसे (उन्मिश्र)
(m)	मेरा अधिकार उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में है।	पाँच समिति
(n)	मैं वचन का आठवाँ दोष हूँ।	विकथा
(o)	मैं उत्पादना का प्रथम दोष हूँ।	धाई (धात्री दोष)

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) खामेमि खमासमणो.....तित्तिसन्नयराए। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तिसन्नयराए

(b) इट्ठं कंतं.....रयण करण्डगभूयं। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं धिज्जं विसासियं सम्मयं
अणुमयं बहुमयं भण्ड करंडगसमाणं रयणकरण्डगभूयं

(c) श्री ऋषभ.....दो शिववास।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपास ।
चन्दाप्रभुजी ने सुविधि जिनेश्वर, शीतल दो शिववास

(d) पारस.....जोड़ी हाथ।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. पारस-पारस सरिखा प्रभुजी, नावारिस के नाथ ।
वर्धमान शासन के स्वामी, प्रणमूँ जोड़ी हाथ

(e) पोरिसी पाठ के कोई चार आगार लिखिए।

उ. उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(f) आयम्बिल के कोई चार आगार लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई भी चार आगार मान्य है-
अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं,
(पारिट्ठावणियागारेणं) महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं।

(g) भक्तामर के पहले श्लोक का भावार्थ लिखिए।

उ. इसमें आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए और भाव मंगल की प्राप्ति के लिए इष्ट देव को नमस्कार किया गया है।

(h) भक्तामर के छठे श्लोक में कोयल की उपमा क्यों दी गई है ?

उ. क्योकि कोयल के बोलने में जिस प्रकार से बसन्त ऋतु में आम्र वृक्षों की सुन्दर कलियाँ ही निमित्त

होती हैं, वैसे ही आपकी भक्ति मुझे आपकी स्तुति करने में तत्पर कर रही है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) आस्तां.....विकास भाञ्जि।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त - दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरूते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि।।

(b) चित्रं किमत्र.....कदाचित्।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर् -नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पांतकालमरूता चलिताचलेन,किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्?

(c) सुपार्श्वनाथ का.....चौबीसी भगवान।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. सुपार्श्वनाथ का कीर्त्तन करते, चन्द्र प्रभु को वन्दन करते।
सुविधिनाथ का नाम सुमरते, शीतल प्रभु को चित्त में धरते।
जय श्रेयांस, जय वासुपूज्य, जय चौबीसी भगवान।।

(d) अनन्त सिद्ध का.....चौबीसी भगवान।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. अनन्त सिद्ध का कीर्त्तन करते, विहरमान को वन्दन करते।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते।
'केवल' शिष्य विनय करता, जय चौबीसी भगवान।।

(e) एकासन ग्रहण करने का पाठ लिखिए।

उ. उग्गए सूरे एगासणं पच्चक्खामि, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आकुंचणपसारणेणं, गुरूअब्भुट्ठाणेणं (पारिट्ठावणियागारेणं), महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(f) आयम्बिल ग्रहण करने का पाठ लिखिए।

उ. उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, (पारिट्ठावणियागारेणं) महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(g) तस्स धम्मस्स.....जिण चउव्वीसं। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए
विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं

(h) एव महं.....जिण चउव्वीसं।। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. एव महं आलोइय निंदिय गरिहिय दुगुंच्छियं सम्मं
तिविहेणं पडिक्कंतो, वंदामि जिण चउव्वीसं।।

कक्षा : पाँचवी – जैन धर्म चंद्रिका (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'खात-खनकर' शब्द का अर्थ है-

(क) दीवार में सेंध लगाना (ख) झूठा उपदेश देना

(ग) कीमती वस्तु (घ) गुप्त बात (क)

(b) ''हिंसाकारी शस्त्र' किस शब्द का अर्थ है-

(क) प्राणातिपात (ख) अधिकरण

(ग) अवयव (घ) वितिगिच्छा (ख)

(c) यंत्रों के काम को कहते हैं -

(क) इंगालकम्मे (ख) वणकम्मे

(ग) साडीकम्मे (घ) इनमें से कोई नहीं (घ)

(d) स्वामी की आज्ञा आदि न होते हुए भी उसकी वस्तु लेना कहलाता है-

(क) प्राणतिपात (ख) परिग्रह

(ग) मृषावाद (घ) अदत्तादान (घ)

(e) किसका आसन शरणागति व विनय का प्रतीक है -

(क) वन्दना (ख) भाव वंदना

(ग) खमासामणो (घ) णमोत्थुणं (ख)

(f) विराधना कितने प्रकार की बताई गई हैं -

(क) 08 (ख) 12

(ग) 10 (घ) 18 (ग)

(g) 5 समिति 3 गुप्ति का थोकड़ा चलता है-

(क) उत्तराध्ययन अध्ययन 21 (ख) उत्तराध्ययन अध्ययन 22

(ग) उत्तराध्ययन अध्ययन 23 (घ) उत्तराध्ययन अध्ययन 24 (घ)

(h) साधु के निमित्त से मेहमानों को आगे-पीछे करना दोष है-

(क)मीसजाए (ख) ठवणा

(ग) पाहुडियाए (घ) पओअर (ग)

(i) भिखारी की तरह दीनपन से मांगकर आहारादि लेना दोष है-

(क)वणीमगे (ख) तिगिच्छे

(ग) आजीव (घ) मूलकम्मे (क)

(j) दूसरों को हानि पहुँचाने का विचार करना कहलाता है-

(क) संरंभ (ख)समारंभ

(ग) आरंभ (घ) कोई नहीं (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) शंकितादि 10 दोष होते हैं। (हाँ)

(b) मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना मनोगुप्ति है। (हाँ)

(c) 'अज्झोयरए' उद्‌गम का दोष है। (हाँ)

(d) 'अधोदिशा' में से सिद्ध होते हैं। (नहीं)

(e) 'बाहुबली' ने बलमद किया था। (नहीं)

(f) जो आत्मा को मलिन करें उसे पाप कहते हैं। (हाँ)

(g) सूत्रागम और तदुभयागम मिलकर अर्थागम कहलाता है। (नहीं)

(h) कषाय का प्रतिक्रमण क्षमापना पाठ से होता है। (हाँ)

(i) नवीन पापों की आलोचना करना प्रतिक्रमण कहलाता है। (नहीं)

(j) जंतपीलणकम्मे सातवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं एक ऐसा दोष हूँ जो भोजन में गृद्ध होकर उसके स्वाद की प्रशंसा करते हुए खाने पर लगता हूँ। इंगाले

(b) मैं प्रतिक्रमण का सार पाठ हूँ। इच्छामि ठामि

(c) मेरे द्वारा उत्कृष्ट वंदना की जाती है। इच्छामि खमासमणो

(d) मेरे 563 भेद हैं। जीव

(e) मैंने ऐश्वर्यमद किया था। दशार्णभद्र राजा

(f) मेरा पालन करने से अहिंसा व्रत का पालन होता है। रात्रि भोजन त्याग

(g) मेरा चौथा भेद निद्रा है। प्रमाद

(h) मैं अंधकार का पाठ हूँ। 18 पापस्थान

(I) मेरा अर्थ 'एक-दिन-रात' है। अहोरत्तं

(j) मैं निषेधरूप प्रतिज्ञा हूँ। प्रत्याख्यान/पच्चक्खाण

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **इकवीसवाँ.....भरतार। रिक्त स्थान पूरा कीजिए ।**

उ इकवीसवाँ नमिनाथ निरूपम, अरिष्टनेमी जगधार।

तोरण से प्रभु पाछा फिरिया, शिव रमणी भरतार।।

(b) **विमलनाथ.....जय चौबीसी भगवान। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

उ विमलनाथ का कीर्तन करते, अनन्तनाथ को वंदन करते ।

धर्मनाथ का नाम सुमरते, शांतिनाथ का चित्त में धरते।

जय कुंथु, जय अरनाथ, जय चौबीसी भगवान।।

(c) **वचन गुप्ति के समारंभ व काय गुप्ति के समारंभ में अंतर लिखिए।**

उ वचन गुप्ति के समारंभ में दूसरों को पीड़ा उत्पन्न करने वाला मन्त्रादि गुनना है, जबकि काय गुप्ति के समारंभ में दूसरों को पीड़ा देने हेतु लात वगैरह से प्रहार करना है।

(d) **संयोजना, अपमाणं का अर्थ लिखिए।**

उ संजोयणा- अच्छा स्वाद या गंध उत्पन्न करने के लिए संयोग मिलाना संयोजना दोष है।

अपमाणं- तृष्णा अथवा जिह्वा के स्वाद के लिए खुराक (प्रमाण) से अधिक आहार करना अप्रमाण दोष है।

(e) **कौनसे व्रत में करण योग नहीं हैं व क्यों ?**

उ बारहवें व्रत में साधु-साध्वी को चौदह प्रकार की निर्दोष वस्तुएँ देने तथा भावना भाने का उल्लेख है। पापों के त्याग का वर्णन नहीं होने से इनमें करण-योग की आवश्यकता नहीं है।

(f) **प्रमाद की परिभाषा व भेद लिखिए।**

उ प्रमाद- संवर-निर्जरा युक्त शुभ कार्य में यत्न-उद्यम न करने को प्रमाद कहते हैं। अथवा आत्म-स्वरूप का विस्मरण होना प्रमाद है।

भेद- 1. मद्य 2. विषय 3. कषाय 4. निद्रा 5. विकथा।

(g) **अकल्पनीय व अकरणीय में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उ अकल्पनीय- सावद्य भाषा बोलना आदि प्रवृत्तियाँ 'अकल्पनीय' हैं।

अकरणीय- अयोग्य सावद्य आचरण करना 'अकरणीय' है।

(h) **निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।**

उ **महुरविहि मधुर फल आदि** **उवाणहविहि जूते मौजे आदि**

धूवविहि धूप अगर तगर आदि **विगयविहि दूध,दही, घी आदि**

(i) **प्रतिक्रमण करने से कोई चार लाभ लिखिए।**

उ **1 लगे दोषों की निवृत्ति होती है।** **2 प्रवचन माता की आराधना होती है।**

3 तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन होता है। **4 व्रतादि ग्रहण करने की भावना जगती है।**

5 सूत्र (आगम) की स्वाध्याय होती है। **6 अशुभ कर्मों के बंधन से बचते है।**

7 अपने दोषों की आलोचना करके व्यक्ति आराधक बन जाता है।

(नोट- इनमें से कोई चार)

(j) **निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।**

उ **जावज्जीवाए- जीवन पर्यन्त** **जावनियमं- जब तक नियम पालूं तब तक**

जाव अहोरत्तं- एक दिन रात पर्यन्त

(k) **चौथी समिति को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से लिखिए।**

उ द्रव्य से- उपधि देखकर व पूँजकर रखे तथा लेवें। क्षेत्र से- सर्व क्षेत्र से

काल से- जीवन पर्यन्त भाव से- उपयोग सहित (राग-द्वेष रहित)

(l) **भक्तामर की प्रथम गाथा का हिन्दी अर्थ लिखिए।**

उ **अर्थ- इनमें आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने के लिए और भाव मंगल की प्राप्ति के लिए इष्ट देव को नमस्कार किया गया है।**

(m) **तस्स सव्वस्स पाठ का अर्थ लिखिए।**

उ **तस्स सव्वस्स देवसियस्स** **उन सब दिवस सम्बंधी**

अइयारस्स **अतिचारों का जो**

दुब्भासिय दुच्चिंतिय **दुर्वचन व बुरे चिंतन से**

दुच्चिट्ठियस्स **तथा कायिक कुचेष्टा से किये गये हैं।**

आलोयंतो पडिक्कमामि **उन अतिचारों की आलोचना करता हुआ उनसे अलग होता हूँ।**

(n) **'परिग्रह' किसे कहते हैं ?**

उ किसी भी व्यक्ति एवं वस्तु पर मूर्च्छा, ममत्व होना परिग्रह है। खेत, घर, धन, धान्य, आभूषण, वस्त्र, वाहन, दास, दासी, कुटुम्ब, परिवार आदि का संग्रह रखना बाह्य परिग्रह है व क्रोध-मान-माया-लोभ-ममत्व आदि आभ्यंतर परिग्रह है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **'पोरिसी' ग्रहण करने का पाठ लिखिए।**

उ उग्गए सूरे पोरिसिं पच्चक्खामि,

चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणाभोगेणं,

सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं,

सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(b) **सामायिक व पौषध में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उ 1 श्रावक-श्राविकाओं की सामायिक केवल एक मुहूर्त यानि 48 मिनट की होती है, जबकि पौषध कम से कम चार प्रहर का (लगभग 12 घंटे का) होता है।

2 सामायिक में निद्रा और आहार का त्याग करना ही होता है, जबकि पौषध चार और उससे अधिक प्रहर का होने से रात्रि के समय निद्रा ली जा सकती है। प्रतिपूर्ण पौषध में तो दिन में भी चारों आहारों का त्याग रहता है, किंतु देश पौषध में-दया व्रतादि में दिन में अचित्त आहारादि ग्रहण किया जा सकता है। रात्रि में तो चौविहार त्याग होता ही है।

(c) **द्रव्य व भाव प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**

उ द्रव्य प्रतिक्रमण- उपयोग रहित, केवल परम्परा के आधार पर पुण्य फल की इच्छा रूप प्रतिक्रमण करना अर्थात् अपने दोषों की, मात्र पाठों को बोलकर शब्द रूप में आलोचना कर लेना, दोष-शुद्धि का कुछ भी कुछ भी विचार नहीं करना, ' द्रव्य प्रतिक्रमण' है।

भाव प्रतिक्रमण- उपयोग सहित, लोक-परलोक की चाह रहित, यश-कीर्ति -सम्मान आदि की अभिलाषा नहीं रखते हुए, मात्र अपनी आत्मा को कर्म-मल से विशुद्ध बनाने के लिए जिनाज्ञा अनुसार किया जाने वाला प्रतिक्रमण 'भाव प्रतिक्रमण' है।

(d) **चित्रं किमत्र.....चलितं कदाचित्। रिक्त स्थान पूरा कीजिए।**

उ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्-

नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।

कल्पांतकालमरूता चलिताचलेन,

किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्?

(e) **व्रत व पच्चक्खाण में अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उ 1 व्रत विधिरूप प्रतिज्ञा व्रत है, जैसे मैं सामायिक करता हूँ एवं पच्चक्खाण निषेधरूप प्रतिज्ञा है जैसे सावद्य योगों का त्याग करता हूँ।

2 व्रत मात्र चारित्र में ही होते है जबकि पच्चक्खाण चारित्र-तप दोनों में होते हैं।

3 व्रत करण योग के साथ ग्रहण किये जाते हैं जबकि पच्चक्खाण करण योग के साथ भी और इनके बिना भी ग्रहण किये जाते हैं।

4 व्रत में पाठ के अंत में तस्स भंते! पडिक्कमामि, निन्दामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि आता है और पच्चक्खाण में अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि आता है।

(f) **सच्ची बात प्रकट करना अतिचार किन कारणों से माना जाता है ?**

उ स्त्री आदि की सत्य परन्तु गोपनीय बात प्रकट करने से उसके साथ विश्वासघात होता है, वह लज्जित होकर मर सकती है या राष्ट्र पर अन्य राष्ट्र का आक्रमण आदि हो सकता है। अतः विश्वासघात और हिंसा की अपेक्षा सत्य बात प्रकट करना भी अतिचार है।

(g) **काय गुप्ति के चार भेद स्पष्ट कीजिए।**

उ 1 द्रव्य से- काय गुप्ति को संरंभ,समारंभ तथा आरंभ में बुरे अध्यवसाय रूप नहीं प्रवर्तावे।

2 क्षेत्र से- सर्व क्षेत्र से

3 काल से- जीवन पर्यन्त

4 भाव से- उपयोग सहित।

(h) **आस्तां तव.....विकाशभाञ्जिज्। रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए।**

उ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त- दोषं,

त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।

दूरे सहस्रकिरणः कुरूते प्रभैव,

पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि।।

(i) **10 प्रकार की स्थंडिल भूमि के प्रथम 3 भेद लिखिए।**

उ 1 गृहस्थ आवे नहीं , देखे नहीं। आवे नहीं, देखे है। आवे हैं, देखे नहीं। आवे हैं, देखे हैं। इन चार भंगों में प्रथम भंग परठने हेतु उत्तम है।

2 आत्मा (शरीर-विराधना) जीव (छह काय-विराधना) तथा प्रवचन (शासन की निन्दा) का उपघात हो, ऐसे स्थान पर नहीं परठे।

3 समभूमि पर परठे।

(j) **18,24,120 प्रकारे मिच्छामि दुक्कडं किस प्रकार से दिया जाता है ?समझाइए।**

उ जीव के 563 भेदों को 'अभिहया वत्तिया' आदि दस विराधना से गुणा करने पर 5630 भेद बनते हैं। फिर इनको राग और द्वेष के साथ दुगुणा करने से 11260 भेद बनते हैं। फिर इनको मन,वचन और काया इन तीन योगों से गुणा करने पर 33780 भेद होते हैं। फिर इनको तीन करण से गुणा करने पर 101340 भेद बनते है। इनको तीन काल से गुणा करने पर 304020 भेद बनते हैं। फिर इनको पंच परमेष्ठि और आत्मा इन छह से गुणा करने पर 18,24,120 प्रकार बनते हैं, अतः इस प्रकार मिच्छामि दुक्कड़ं दिया जाता है।

(k) **सिद्धों के 14 प्रकार लिखिए।**

उ 1 स्त्रीलिंग सिद्ध, 2 पुरुषलिंग सिद्ध, 3 नपुंसकलिंग सिद्ध, 4 स्वलिंग सिद्ध, 5 अन्यलिंग सिद्ध, 6 गृहस्थलिंग सिद्ध, 7 जघन्य अवगाहना, 8 मध्यम अवगाहना, 9 उत्कृष्ट अवगाहना वाले सिद्ध, 10 ऊर्ध्वलोक, 11 अधोलोक, 12 तिर्यक् लोक में होने वाले सिद्ध, 13 समुद्र में तथा 14 जलाशय में होने वाले सिद्ध।

(l) **उपसर्ग के समय संथारा कैसे करना चाहिए ?**

उ जहाँ उपसर्ग उपस्थित हो, वहाँ की भूमि पूँज कर बड़ी संलेखना में आये हुए ''नमोत्थुणं से विहरामि''तक पाठ बोलना चाहिए और आगे इस प्रकार बोलना चाहिए ''यदि उपसर्ग से बचूँ तो अनशन पालना कल्पता है, अन्यथा जीवन पर्यन्त अनशन है।

(m) **कौनसा मद किसने किया ?**

उ जाति मद - हरिकेशी ने पूर्वभव में
कुलमद - मरीचि ने
बलमद - श्रेणिक महाराज ने
रूप मद - सनत् कुमार चक्रवर्ती ने
तप मद - कुरगडु ने पूर्वभव में
लाभ मद - संभूम चक्रवर्ती ने
श्रुत मद - स्थूलिभद्र ने
ऐश्वर्यमद- दशार्णभद्र राजा ने।

(n) **जीव की रक्षा हेतु झूठी साक्षी देना उचित है या नहीं ?स्पष्ट कीजिए।**

उ रक्षा की भावना उत्तम है पर रक्षा के लिये भी सापराधी की झूठी साक्षी नहीं देना चाहिये। कदाचित् इससे कभी अन्य निरपराधी की मृत्यु भी हो सकती है। निरपराधी को बचाने के लिये भी झूठी साक्षी देना उचित नहीं है। भविष्य में इससे साक्षी देने वाले का विश्वास उठ जाता है। अतः झूठी साक्षी नहीं देनी चाहिए।

कक्षा : पाँचवी – जैन धर्म चन्द्रिका (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) बल मद किया-
(क) मरीचि ने (ख) सुभूम चक्रवर्ती ने
(ग) श्रेणिक महाराज ने (घ) करगडु ने पूर्व भव में (ग)

(b) ''जावनियमं'' शब्द का प्रयोग हुआ है-
(क) 10वें व्रत में (ख) बड़ी संलेखना में
(ग) 11वें व्रत में (घ) 9वें व्रत में (घ)

(c) निर्बल से सबल छीनकर देवें तो दोष लगता है-
(क) अच्छिज्जे (ख) अणिसिट्ठे
(ग) उब्भिन्ने (घ) वणीमगे (क)

(d) 'शिव रमणी भरतार' किसके लिये कहा गया है-
(क) महावीर स्वामी (ख) ऋषभदेव
(ग) अरिष्टनेमि (घ) पार्श्वनाथ (ग)

(e) अबोध बालक किसकी छाया को पकड़ना चाहता है -
(क) चन्द्रमा (ख) माता
(ग) प्रभु (घ) स्वयं (क)

(f) दूसरों को मानसिक हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना है -
(क) संरंभ (ख) समारंभ
(ग) आरम्भ (घ) कोई नहीं (ख)

(g) भगवान के गुण व्याप्त हैं-
(क) उर्ध्वलोक (ख) अधोलोक
(ग) मध्यलोक (घ) तीनों लोक (घ)

(h) 'भोमालीए' का अर्थ है-
(क) गाय सम्बन्धी (ख) भूमि सम्बन्धी
(ग) चक्कर आना (घ) झूठी साक्षी देना (ख)

(i) देव का आवश्यक है-
(क) पहला (ख) दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चौथा (ख)

(j) ''पुव्विपच्छासंथवं'' किसका दोष है-
(क) उत्पादना (ख)उद्गम
(ग) ग्रहणैषणा (घ) परिभोगैषणा (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) सामायिक में मल-मूत्रादि त्यागने-परठने की भूमि देखना अनिवार्य है। (नहीं)
(b) ''मैने बहुत किये अपराध'' चौबीसी के रचयिता त्रिलोक मुनि हैं। (हाँ)
(c) आत्म-स्वरूप का स्मरण होना प्रमाद है। (नहीं)
(d) 12 व्रतों में पाँच विरमण व्रत हैं। (नहीं)
(e) दूध आदि पदार्थों की मर्यादा करना पेज्जविहि है। (हाँ)
(f) ''संभीमं' का अर्थ रोग है। (नहीं)
(g) कोयल के बोलने में बसंत ऋतु में आम्रवृक्ष की सुन्दर कलियाँ ही निमित्त बनती हैं। (हाँ)
(h) प्राणियों की रक्षा करने के लिये आहार किया जाता है। (नहीं)
(i) प्रतिक्रमण करने से सूत्र की स्वाध्याय होती है। (हाँ)
(j) सचित्त वस्तु पर रखा हुआ आहारादि लेवे तो पिहित दोष लगता है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) हमारे अत्यन्त निकट नहीं परठे। ग्राम-नगर-उद्यानादि

(b) मुझ पर रही हुई साधारण जल की बूँद मोती की शोभा को प्राप्त करती है। कमलिनी के पत्तों पर

(c) समभाव की स्मृति बार-बार बनी रहे, इसके लिये मेरा पाठ बोला जाता है। करेमि भंते।

(d) मैं चौदह पूर्वों का पाठक हूँ। उपाध्याय जी महाराज

(e) मेरे प्रभाव से जीव अनेक तरह के रूप धारण करता है। नाम कर्म

(f) मेरा आसन शरणागति व विनय का प्रतिक है। वन्दना

(g) मैं आप्त पुरुषों की वाणी हूँ। आगम

(h) हम किंपाक फल और आशीविष के समान घातक हैं। काम भोग

(i) मुझे देवता भी नमस्कार करते हैं। ब्रह्मचारी

(j) मैं हमेशा पास रखी जाने वाली उपधि हूँ। औघिक

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) तुम बिन.....दयाल। रिक्त स्थान पूरा कीजिए ।

उ. तुम बिन पायो दुःख अनन्ता, जनम-मरण जंजाल।
त्रिलोक ऋषि कहे जिम-तिम करी ने, तारो दिन दयाल

(b) अनंत सिद्ध.....चौबीसी भगवान। रिक्त स्थान पूरा कीजिए ।

उ. अनन्त सिद्ध का कीर्त्तन करते, विहरमान को वंदन करते।
गणधर प्रभु का नाम सुमरते, गुरुदेव को चित्त में धरते।
केवल शिष्य विनय करता, जय चौबीसी भगवान।।

(c) उच्चारण की अशुद्धि से होने वाली कोई दो हानियाँ लिखिए।

उ. 1. उच्चारण की अशुद्धि से कई बार अर्थ सर्वथा नष्ट हो जाता है।
2. कई बार विपरीत अर्थ हो जाता है।
3. कई बार आवश्यक अर्थ में कमी रह जाती है।
4. कई बार सत्य किन्तु अप्रासंगिक अर्थ हो जाता है।

(d) हास्य में एकाग्रता व मौखर्य में एकाग्रता को स्पष्ट कीजिए।

उ. हास्य में एकाग्रता- जैसे कोई मजाक में कुलीन पुरुष को भी अकुलीन कह कर बुलावे।
मौखर्य में एकाग्रता- जैसे कोई बकवादी, दूसरों की निन्दा करता ही रहे।

(e) जीव अपने कर्मानुसार मरते और दुःख पाते हैं, फिर मारने वालों को पाप क्यों लगता है ?

उ. मारने वाले को मारने की दृष्ट भावना और मारने की दृष्ट प्रवृत्ति से पाप लगता है।

(f) दर्शन मोहनीय की प्रकृतियाँ कौन-कौनसी हैं ?

उ. दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ- 1. मिथ्यात्व मोहनीय 2. मिश्र मोहनीय 3. सम्यक्त्व मोहनीय।

(g) ईर्या समिति को परिभाषित करते हुए इसके कारणों के नाम लिखिए।

उ. ईर्या समिति- संयम की रक्षा हेतु चलने फिरने की सम्यक् (निर्दोष) प्रवृत्ति को ईर्या समिति कहते हैं।
ईर्या समिति के चार कारण है- 1. आलम्बन 2. काल 3.मार्ग 4. यतना।

(h) पुप्फविहि.....महुरविहि। रिक्त स्थान पूरा कीजिए ।

उ. पुप्फविहि, आभरणविहि, धूवविहि, पेज्जविहि, भक्खणविहि, ओदणविहि, सूपविहि, विगयविहि, सागविहि, महुरविहि।

(i) त्वत्संस्तवेन.....शार्वरमंधकारं। इस श्लोक का भावार्थ लिखिए।

उ. जैसे रात्रि में संघन अंधकार सूर्य की किरणों से नष्ट हो जाता है, वैसे ही आपकी स्तुति से जीवों के

अनेक भवों से संचित पाप क्षणभर में नष्ट हो जाते हैं।

(j) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ. तक्करप्पओगे- चोर को सहायता दी हो। दुगुंच्छियं- जुगुप्सा (ग्लानि-घृणा) करके।
झूसणा- सेवन करना। नाए वा- जाति आदि के दबाव से

(k) परिभोगैषणा से सम्बन्धित दोषों के नाम लिखिए।

उ. 1. संजोयणा 2. अपमाणं 3. इंगाले 4. धूमे 5. कारणे।

(l) भक्तामर के चौथे श्लोक ''वक्तुं गुणान्..... भुजाम्याम्।।'' का भावार्थ लिखए।

उ जैसे प्रलयकाल में भयानक समुद्र को कोई भुजाओं से पार नहीं कर सकता, उसी प्रकार में भी आपके उज्ज्वल गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हूँ।

(m) अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ किसके समान बताये गये हैं ?

उ. अप्रत्याख्यानी क्रोध- सूखे तालाब की दरार।
अप्रत्याख्यानी मान- अस्थि-हड्डियों का स्तंभ
अप्रत्याख्यानी माया- मेंढे के सींग
अप्रत्याख्यानी लोभ- खंजन गाड़ी के पहिये का कीट।

(n) 12वें व्रत में करण योग क्यों नहीं है ?

उ. 12वें व्रत में साधु-साध्वी को चौदह प्रकार की निर्दोष वस्तुएँ देने तथा भावना भाने का उल्लेख है। पापों के त्याग का वर्णन नहीं होने से इसमें करण-योग की आवश्यकता नहीं है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) 'आयंबिल' ग्रहण करने का पाठ लिखिए।

उ उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, (परिट्ठावणियागारेणं) महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

(b) आवश्यक सूत्र को प्रतिक्रमण सूत्र क्यों कहा जाता है ?

उ. आवश्यक सूत्र के 6 आवश्यकों में से प्रतिक्रमण आवश्यक सबसे बड़ा एव महत्त्वपूर्ण है। इसलिये वह प्रतिक्रमण के नाम से प्रचलित हो गया है। दूसरा कारण वास्तव में प्रथम तीन आवश्यक प्रतिक्रमण की पूर्व क्रिया के रूप में और शेष दो आवश्यक उत्तर क्रिया के रूप में किये जाते हैं।

(c) आहार करने के छह कारण लिखिए।

उ. 1. क्षुधा वेदनीय की शांति के लिये। 2. मार्ग आदि की शुद्धि के लिये।
3. गुरु, ग्लान, नवदीक्षित, तपस्वी आदि की वैयावृत्य के लिये।
4. संयम की रक्षा के लिये। 5. प्राणों की रक्षा के लिये।
6. धर्म का चिन्तन-मनन करने के लिये।

(d) नात्यद्भुतं.....करोति। रिक्त स्थान पूरा कीजिए।

उ. नात्यद्भुतं भुवनभूषण-भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भूवि भवंतमभिष्टुवंत।
तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।

(e) परठने योग्य वस्तुएँ कौन-कौनसी हैं ?

उ. उच्चारादि परठने की वस्तु। (परठने की आठ वस्तु- 1. उच्चार मल, 2. प्रस्रवण-मूत्र, 3. खेल-बलगम, 4. सिंघाण-श्लेष्म सेडा, 5. जल्ल-शरीर का मैल, 6. आहार-पानी, 7. उपधि-जीर्ण वस्त्रादि, पटादि, 8. देह व अन्य वस्तु- गोबर, राख, केशादि।)

(f) 84 लाख जीवयोनि के पाठ में बताये गये मनुष्य के 14 लाख जीवयोनि के भेद कैसे बनते हैं ?

उ. मनुष्य के मूल भेद 700 माने जाते हैं।
इन भेदों को 5 वर्ण, 2 गन्ध, 5 रस, 8 स्पर्श और 5 संस्थान से अलग-अलग गुणा करने पर मनुष्य के 14 लाख भेद बनते हैं
जैसे- 700X5 वर्ण = 3500X2 गंध =7000X5 रस =35000X8 स्पर्श =2,80,000X5 संस्थान =14,00,000 भेद होते है।

(g) रात्रि-भोजन-त्याग श्रावक व्रतों के पालन में किस प्रकार सहयोगी बनते हैं ? कोई चार कारण बताइये।

उ. नोटः इनमें से कोई चार-
1. रात्रि भोजन करने वाले गर्म भोजन की इच्छा से प्रायः रात्रि में भोजन सम्बन्धी आरम्भ-समारम्भ करते हैं। रात्रि में भोजन बनाते समय त्रस जीवों की भी विशेष हिंसा होती हैं, रात्रि भोजन त्याग से वह हिंसा रूक जाती है।
2. माता-पिता आदि से छिपकर होटल आदि में खाने की आदत एवं उससे सम्बन्धी झूठ से बचाव होता है।
3. ब्रह्मचर्य पालन में सहजता आती है।
4. बहुत देर रात्रि तक व्यापार आदि न करके जल्दी घर आने से परिग्रह-आसक्ति में कमी आती हैं।
5. भोजन में काम आने वाले द्रव्यों की मर्यादा सीमित हो जाती है।
6. दिन में भोजन बनाने की अनुकूलता होने पर भी लोग रात्रि में भोजन बनाते हैं, किन्तु रात्रि भोजन-त्याग से रात्रि में होने वाली हिंसा का अनर्थ दण्ड रूक जाता है।
7. सायंकालीन-सामायिक प्रतिक्रमण आदि का भी अवसर प्राप्त हो सकता है। घर में महिलाओं को भी सामायिक-स्वाध्याय आदि का अवसर मिल सकता है।
8. उपवास आदि करने में भी अधिक बाधा नहीं आती, भूख सहन करने की आदत बनती है, जिससे अवसर आने पर उपवास-पौषध आदि भी किया जा सकता है।
9. सायंकाल में समय सहज ही संत-सतियों के आतिथ्य-सत्कार (गौचरी बहराना) का भी लाभ मिल सकता है।

(h) वक्त्रं.....कल्पम्। रिक्त स्थान पूर्ण कीजिए।

उ. वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निश्शैष-निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्
बिम्बं कलंक मलिनं क्व निशा करस्य,
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम्।

(i) अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार किसे कहते हैं ?

उ. अतिक्रम- व्रत की प्रतिज्ञा के विरूद्ध व्रत के उल्लंघन करने के विचार को अतिक्रम कहते हैं।
व्यतिक्रम- व्रत का उल्लंघन करने के लिये तत्पर होने को व्यतिक्रम कहते हैं।
अतिचार- व्रत को भंग करने की सामग्री इकट्ठी करना, व्रत भंग के निकट पहुँच जाना।
अनाचार- व्रत का सर्वथा भंग करना अनाचार है।

(j) ज्ञान व ज्ञानी की सेवा क्यों करनी चाहिए ?

उ. ज्ञान व ज्ञानी की सेवा पाँच कारणों से करनी चाहिए-
1. हमे नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है। 2. हमारे संदेह का निवारण होता है।
3. सत्यासत्य का निर्णय होता है। 4. अतिचारों की शुद्धि होती है।
5. नवीन प्रेरणा से हमारे सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप शुद्ध व दृढ़ बनते हैं।

(k) पाँच प्रकार के प्रतिक्रमण मुख्य रूप से कौन-कौनसे पाठ से होते हैं?

उ. मिथ्यात्व- अरिहंतो महदेवो, दंसण समकित के पाठ से।

अव्रत- पाँच महाव्रत और पाँच अणुव्रत से।
प्रमाद- आठवाँ व्रत, अठारह पापस्थान से।
कषाय- अठारह पापस्थान, क्षमापना-पाठ, इच्छामि ठामि से।
अशुभयोग- इच्छामि ठामि, अठारह पापस्थान, नवमें व्रत से।

(l) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. कालं अणवकंखमाणे काल की आकांक्षा (इच्छा) नहीं करता हुआ।
सहसागारेणं अकस्मात् जैसे पानी बरसता हो और मुख में छींटे पड़ जाये।
सव्व समाहिवत्तियागारेणं सब प्रकार की शारीरिक मानसिक निरोगता रहे।

(m) मृषावाद कितने प्रकार का है ? स्पष्ट कीजिए।

उ. मृषावाद दो प्रकार का है- 1. सूक्ष्म और 2. स्थूल।
1. हँसी-मजाक या आमोद-प्रमोद में मामूली सा झूठ बोलने का अनुमोदन करना सूक्ष्म झूठ है।
2. कन्या सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, भूमि सम्बन्धी, धरोहर-गिरवी संबन्धी झूठी साक्षी देना आदि स्थूल मृषावाद है।

(n) उत्कृष्ट 170 तीर्थंकर कैसे होते हैं ? संक्षिप्त में समझाइए।

उ. महाविदेह क्षेत्र पाचँ है। 1 जम्बूद्वीप में, 2 धातकी खण्ड में और 2 अर्धपुष्कर द्वीप में। एक महाविदेह में 32 विजय तथा 5 महाविदेह में 32 X 5 = 160 विजय है। पाँचों महाविदेह क्षेत्र की सभी 160 विजयों में एक साथ एक-एक तीर्थंकर हो सकते हैं। जिससे 160 तीर्थंकर होते हैं। यदि उसी समय में ढाई द्वीप के पाँच भरत और पाँच ऐरवत इन दस क्षेत्रों में प्रत्येक में एक-एक तीर्थंकर हो तो कुल मिलाकर 160+10 = 170 तीर्थंकर उत्कृष्ट रूप में एक साथ हो सकते हैं।

कक्षा : पाँचवीं – जैन धर्म चन्द्रिका (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'हीणक्खरं' का अर्थ है-
(क) अक्षर घटाना (ख) अक्षर बढ़ाना
(ग) पद कम करना (घ) विनयरहित पढ़ना (क)

(b) दर्शन सम्यक्त्व का अतिचार नहीं है-
(क) संका (ख) कंखा
(ग) कूड़ा आल (घ) वितिगिच्छा (ग)

(c) 'विगयविहि' का अर्थ है-
(क) मूंग, चने की दाल (ख) शाक, सब्जी
(ग) दूध,दही,घी (घ) मधुर फल (ग)

(d) 'उच्चारपासवण भूमि' किस अणुव्रत का अतिचार है-
(क) पहला अणुव्रत (ख) चतुर्थ अणुव्रत
(ग) ग्यारहवाँ अणुव्रत (घ) बारहवाँ अणुव्रत (ग)

(e) यतना का भेद नहीं है-
(क) द्रव्य (ख) क्षेत्र
(ग) काल (घ) आलम्बन (घ)

(f) पाँच समिति, तीन गुप्ति के थोकड़े का उल्लेख किया गया है-
(क) उत्तराध्ययन सूत्र में (ख) दशवैकालिक सूत्र में
(ग) नन्दी सूत्र में (घ) अनुयोग द्वार सूत्र में (क)

(g) उपधि के भेद हैं-
(क) 6 (ख) 5
(ग) 2 (घ) 10 (ग)

(h) 'भक्तामर स्तोत्र' में किसकी स्तुति की गई है-
(क) ऋषभदेवजी (ख) भगवान महावीर
(ग) भगवान पार्श्वनाथ (घ) भगवान गौतम बुद्ध (क)

(i) शासन के स्वामी है-
(क) वर्धमान (ख) पारस
(ग) नमिनाथ (घ) अरनाथ (क)

(j) ''सागरियागारेणं'' शब्द किस पच्चक्खाण से सम्बन्धित है-
(क) पोरिसि (ख) एकासना
(ग) आयम्बिल (घ) उपवास (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) आचार्य जी महाराज नववाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। (हाँ)
(b) आठवें अणुव्रत में 26 बोलों की मर्यादा का उल्लेख किया गया है। (नहीं)
(c) दास-दासी, पशु आदि का व्यापार करना केसवाणिज्ये है। (हाँ)
(d) ''कालाइक्कमे'' का सम्बन्ध बारहवें अणुव्रत से है। (हाँ)
(e) पोरिसियं में एक प्रहर का त्याग किया जाता है। (हाँ)
(f) 'मालोहडे' उत्पादना का एक दोष है। (नहीं)
(g) अंधा, लूला, लंगड़े से लेवे तो 'दायग' दोष लगता है। (हाँ)
(h) काया की अशुभ प्रवृत्तियों को रोकना 'काय गुप्ति' है। (हाँ)
(i) भक्तामर स्तोत्र के रचयिता 'मानतुंगाचार्य' हैं। (हाँ)
(j) वर्तमान चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	संथारा का पाठ	(क) 3	बड़ी संलेखना
(b)	मूल सूत्र	(ख) खामेमि सव्वे जीवा	4
(c)	गुत्तीणं	(ग) उद्‌गम का दोष	3
(d)	कन्नालीए	(घ) बड़ी संलेखना	कन्या या वर सम्बन्धी
(e)	क्षमापना पाठ	(च) 4	खामेमि सव्वे जीवा
(f)	मीसजाए	(छ) उत्पादना का दोष	उद्‌गम का दोष
(g)	विज्जा	(ज) कन्या या वर सम्बन्धी	उत्पादना का दोष
(h)	मैंने बहुत किए अपराध	(झ) केवल मुनि	त्रिलोक ऋषि
(i)	जय जिनवर जय	(य) आयंबिल सूत्र	केवल मुनि
(j)	उक्खित्तविवेगेणं	(र) त्रिलोक ऋषि	आयंबिल सूत्र

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं प्रतिक्रमण का संक्षिप्त पाठ हूँ।	इच्छामि ठामि का पाठ
(b)	'अबंभ सेवन' मेरा एक अतिचार है।	ग्यारह अणुव्रत प्रतिपूर्ण पौषध व्रत
(c)	मेरे पच्चक्खाण में डेढ़ प्रहर तक आहार का त्याग होता है।	साड्‌ढ़ पोरसी
(d)	मेरे द्वारा आचार्य, उपाध्याय एवं चतुर्विध संघ से क्षमायाचना की जाती है।	आयरिय उवज्झाए
(e)	मेरा एक अतिचार 'विरुद्धरज्जाइक्कमे' है।	तीसरा अणुव्रत
(f)	मैं एक ऐसा दोष हूँ, जिसे साधु आहार करते समय भोजन की प्रशंसा करते हुए लगाते हैं।	इंगाले
(g)	42 दोष टालकर निर्दोष भिक्षा लेने की प्रवृत्ति को कहते हैं।	एषणा समिति
(h)	मैंने बहुत किये अपराध चौबीसी में मुझे करुणा सागर कहा है।	कुंथुनाथ
(i)	भगवान आदिनाथ के दर्शन की तुलना मुझसे की गई है।	क्षीर समुद्र
(j)	मैं आगम का तीसरा प्रकार हूँ।	तदुभयागमे

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2 = (24)**

(a) चौमासी एवं संवत्सरी में कितने लोगस्स का कायोत्सर्ग किया जाता है ?
चौमासी प्रतिक्रमण में 12 लोगस्स का तथा संवत्सरी प्रतिक्रमण में 20 लोगस्स का कायोत्सर्ग किया जाता है।

(b) अशुभ योगों का प्रतिक्रमण कौन-कौन से पाठ से किया जाता है ?
इच्छामि ठामि, अठारह पापस्थान, नवमें व्रत से।

(c) आगम किसे कहते हैं ?
जो आप्त अर्थात् सर्वज्ञों की वाणी हो, उसे आगम कहते हैं।

(d) संज्ञा किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की होती हैं ?
चारित्र मोहनीय कर्मोदय की प्रबलता से होने वाली अभिलाषा, इच्छा 'संज्ञा' कहलाती है।
यह चार प्रकार की होती है- आहार, भय, मैथुन एवं परिग्रह संज्ञा।

(e) बारहवें व्रत में करण-योग क्यो नहीं है ?
बारहवें व्रत में साधु-साध्वी को चौदह प्रकार की निर्दोष वस्तुएँ देने तथा भावना भाने का उल्लेख है। पापों के त्याग का वर्णन नहीं होने से इसमें करण-योग की आवश्यकता नहीं है।

(f) वचन के आठ दोषों के नाम लिखिए।

1. क्रोध	2.मान	3. माया	4. लोभ
5. हास्य	6. भय	7. मौखर्य (वाचालता)	8. विकथा

(g) औपग्रहिक उपधि किसे कहते हैं ?
प्रातिहारिक उपधि जो गृहस्थ से पाट-पाटलादि कारण से लेवे, भोगे एवं कार्य होने के बाद वापस

लौटावे।

(h) भक्तामर स्तोत्र की निम्न गाथा मूल रूप में लिखिए।

मत्वेति नाथ!.....ननूदबिंदुः।।

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफल - द्युतिमुपैति ननूदबिंदुः।।

(i) ''तुम.....दीन दयाल।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

तुम बिन पायो दुःख अनन्ता, जनम-मरण जंजाल।
'त्रिलोक ऋषि' कहे जिम-तिम करी ने, तारो दीन दयाल।।

(j) ''विमलनाथ.....चौबीसी भगवान।'' उक्त प्रार्थना को पूर्ण कीजिए।

विमलनाथ का कीर्त्तन करते, अनन्तनाथ को वन्दन करते।
धर्मनाथ का नाम सुमरते, शांतिनाथ को चित्त में धरते।
जय कुंथु, जय अरनाथ, जय चौबीसी भगवान।।

(k) पोरिसि प्रत्याख्यान में एक प्रहर के लिये कौन-कौन से आहारों का त्याग किया जाता है ?

असणं, पाणं, खाइमं, साइमं

(l) पाठ को पूर्ण करके लिखिए-

अन्नत्थऽणाभोगेणं.....वोसिरामि।।

अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) सिद्ध भगवान के 15 भेद लिखिए।

(1) तीर्थसिद्ध (2) अतीर्थ सिद्ध (3) तीर्थंकर सिद्ध (4) अतीर्थंकर सिद्ध
(5) स्वयं बुद्ध सिद्ध (6) प्रत्येक बुद्ध सिद्ध (7) बुद्ध बोधित सिद्ध (8) स्त्रीलिंग सिद्ध
(9) पुरुष लिंग सिद्ध (10) नपुंसक लिंग सिद्ध (11) स्वलिंग सिद्ध (12) अन्य लिंग सिद्ध
(13) गृहस्थ लिंग सिद्ध (14) एक सिद्ध (15) अनेक सिद्ध;

(b) प्रतिक्रमण करने के कोई छह लाभ लिखिए।

(1)लगे दोषों की निवृत्ति होती है। (2) प्रवचन माता की आराधना होती है।
(3) तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन होता है। (4) व्रतादि ग्रहण करने की भावना जगती है।
(5) अपने दोषों की आलोचना करके व्यक्ति आराधक बन जाता है।
(6) सूत्र (आगम) की स्वाध्याय होती है। (7) अशुभ कर्मो के बन्धन से बचते हैं।

(c) अतिक्रम, व्यतिक्रम तथा अतिचार को परिभाषित कीजिए।

अतिक्रम- व्रत की प्रतिज्ञा के विरूद्ध व्रत के उल्लंघन करने के विचार को अतिक्रम कहते हैं।
व्यतिक्रम- व्रत का उल्लंघन करने के लिये तत्पर होने को व्यतिक्रम कहते हैं।
अतिचार-व्रत को भंग करने की सामग्री इकट्ठी करना, व्रत भंग के निकट पहुँच जाना अतिचार है।

(d) आठवें अणुव्रत के आठ आगार अर्थ सहित लिखिए।

आए वा	आत्मरक्षा के लिए।
राए वा	राजा की आज्ञा से।
नाए वा	जाति आदि दबाव से।
परिवारे वा	परिवार वालों के दबाव से।
देवे वा	देव के उपसर्ग से।
नागे वा	नाग के उपद्रव से।

जक्खे वा यक्ष के उपद्रव से।
भूए वा भूत के उपद्रव से।

(e) रात्रि-भोजन त्याग के कोई छः लाभ लिखिए।

1. जीवों को अभयदान मिलता है। 2. मांसाहार का दोष नहीं लगता है।
3. अहिंसा व्रत का पालन होता है। 4.पाचन तन्त्र को विश्राम मिलता है।
5.मनुष्य बुद्धिमान और निरोग बनता है। 6.दुर्व्यसनों से बच जाता है।
7.मन और इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं। 8.सुपात्र दान का लाभ मिलता है।
9.प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि का लाभ मिलता है।
10.आहारादि का त्याग होने से कर्मो की निर्जरा होती है।

(f) निम्नमद किसने किया-

1. लाभ मद 2. ऐश्वर्यमद 3. तपमद

1. लाभ मद - संभूम चक्रवर्ती ने। 2. ऐश्वर्यमद- दशार्णभद्र राजा ने।
3. तपमद- कुरगडु ने पूर्वभव में।

(g) 'इच्छामि खमासमणो' का पाठ दो बार क्यों बोला जाता है ?

जिस प्रकार दूत राजा को नमस्कार कर कार्य निवेदन करता है और राजा से विदा होते समय फिर नमस्कार करता है, उसी प्रकार शिष्य कार्य को निवेदन करने के लिये अथवा अपराध की क्षमायाचना करने के लिए गुरु को प्रथम वंदना करता है, खमासमणो देता है और जब गुरु महाराज क्षमा प्रदान कर देते हैं, तब शिष्य वन्दना करके दूसरा खमासमणो देकर वापस चला जाता हैं। बारह आवर्तन पूर्वक वंदन की पूरी विधि दो बार इच्छामि खमासमणो बोलने से ही संभव है। अतः पूर्वाचार्यो ने दो बार इच्छामि खमासमणो बोलने की विधि बतलायी है।

(h) एषणा समिति के भेदों का अर्थ सहित उल्लेख कीजिए।

1.गवेषणैषणा- आहार आदि ग्रहण करने के पहले शुद्धि - अशुद्धि की खोज करना गवेषणैषणा है।
2.ग्रहणैषणा- आहारादि ग्रहण करते समय शुद्धि - अशुद्धि का ध्यान रखना ग्रहणैषणा है।
3.परिभोगैषणा- आहारादि भोगते समय शुद्धि - अशुद्धि का उपयोग रखना परिभोगैषणा है।

(i) साधु के आहार करने के 6 कारण लिखिए।

1.क्षुधा वेदनीय की शान्ति के लिये।
2. गुरु, ग्लान, नवदीक्षित, तपस्वी आदि की वैयावृत्त्य के लिये।
3. मार्ग आदि की शुद्धि के लिये। 4. संयम की रक्षा के लिये।
5.प्राणों की रक्षा के लिये। 5. धर्म का चिन्तन - मनन करने के लिये।

(j) ''चित्रं.....कदाचित्।'' उक्त गाथा का भावार्थ लिखिए।

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
कल्पांतकालमरूता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्?

(k) ''इकवीसवां.....जोड़ी हाथ।'' रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

इकवीसवाँ नमिनाथ निरूपम, अरिष्टनेमी जगधार ।
तोरण से प्रभु पाछा फिरिया, शिव रमणी भरतारारस-पारस सरिखा प्रभुजी, नावारिस के नाथ ।
वर्धमान शासन के स्वामी, प्रणमूँ जोड़ी हाथ

(l) आयंबिल-सूत्र का पाठ लिखिए।

उग्गए सूरे आयंबिलं पच्चक्खामि अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहिसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं,(पारिट्ठावणियागारेणं) महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।